वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सुरत

तृतीय वर्ष बी.ए.

हिंदी भाषा-कौशल

सेमेस्टर-5

(2015-2016 के शैक्षिक वर्षों के लिए)

प्रश्नपत्र-5 हिंदी भाषा-कौशल (अंग्रेजी के स्थान पर) Foundation Course-03

प्रस्तावना- हिंदी हमारे देश की राजभाषा है। देश की अधिकतर जनता इसे समझती है। अहिन्दी प्रदेशों में इसका प्रचार-प्रसार हो यह आवश्यक है। हिंदी को मुख्य विषय के रूप में न लेकर पढ़ने वाले छात्र हिंदी से परिचित हो सकते हैं।

पाठ्यपुस्तक-1. अंजो दीदी-उपेन्द्रनाथ अश्क

2. व्याकरण

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 उपेन्द्रनाथ अश्क : व्यक्तित्व और कृतित्व
नाटक के तत्त्व और प्रकार।
'अंजो दीदी' नाटक का कथानक
'अंजो दीदी' में संवाद-योजना

ईकाई-2 'अंजो दीदी' के पात्र
'अंजो दीदी' में देश, काल और वातावरण
'अंजो दीदी' की भाषा-शैली
'अंजो दीदी' का शीर्षक
'अंजो दीदी' का उद्देश्य

ईकाई-3 व्युत्पत्ति एवम् रचना की दृष्टि से शब्दों का वर्गीकरण-
रूढ,यौगिक, योगरूढ, विकारी तथा अविकारी।

ईकाई-4 हिंदी शब्द-भंडार-तत्सम, तद्भव, देशज तथा विदेशज।

अंक- विभाजन-ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)
ईकाई 3 और 4 से टिप्पणियाँ (चार विकल्प से दो) (7×2=14 अंक)
पठित नाटक से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-
1.हिंदी व्याकरण-डॉ.उमेशचंद्र शुक्ल
2.आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना-डॉ.वासुदेवनंदन प्रसाद
3.संक्षेपीकरण-गणेशप्रसाद गुप्त
4.अच्छी हिंदी-रामचंद्र वर्मा
5.प्रयोग और प्रयोग-वी.रा.जगन्नाथन
6.आधुनिक नाट्य और नाटक-कुँवरजी अग्रवाल **Repeter**

7.हिंदी नाटकः आज-कल - डॉ.जयदेव तनेजा

8.हिंदी नाटकःआज तक-डॉ.वीणा गौतम

9.हिंदी नाटक-कोश-डॉ.दशरथ ओझा

10.हिंदी नाटक-बच्चन सिह

HINDI
B.A. DEGREE COURSE
5th SEMESTER

Sr. No.	Name of Course	Total Marks Ext / Internal	Parsing Standard	Total Teaching Hours	Weekly Teaching Hours	Credits
1	PAPER- 5 हिंदी भाषा-कौशल Foundation Course-5	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	~~04~~ 03
7	Self Studies, Assignments & Tutorials Self Study Course-1	-	-	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	~~02~~
8					Total Credits	~~06~~ 03

Model of Time-Table

Session	1	2	3	4	5
Monday	Class -room teaching of One course in each Semester. Three Hours for each course per week Total teaching hours per week=03				Each Day 4th Hour can be used for Library work/presentation ect.
Tuesday					
Wednes					
Thursday					
Friday					
Saturday	Self Study Course				

वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सुरत

तृतीय वर्ष बी.ए.

हिंदी भाषा-कौशल

सेमेस्टर-6

(2015-2016 के शैक्षिक वर्षों के लिए)

प्रश्नपत्र-6 हिंदी भाषा-कौशल (अंग्रेजी के स्थान पर) Foundation Course-04

प्रस्तावना- हिंदी हमारे देश की राजभाषा है। देश की अधिकतर जनता इसे समझती है। अहिन्दी प्रदेशों में इसका प्रचार-प्रसार हो यह आवश्यक है। हिंदी को मुख्य विषय के रूप में न लेकर पढ़ने वाले छात्र हिंदी से परिचित हो सकते हैं।

पाठ्यपुस्तक- 1. लहरों के राजहंस-मोहन राकेश
राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., नई दिल्ली
2. व्याकरण।

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 मोहन राकेश: व्यक्तित्व और कृतित्व
नाटक के तत्त्व और प्रकार
'लहरों के राजहंस' नाटक का कथानक
'लहरों के राजहंस' में संवाद-योजना

ईकाई-2 'लहरों के राजहंस' के पात्र
'लहरों के राजहंस' में देश, काल और वातावरण
'लहरों के राजहंस' की भाषा-शैली
'लहरों के राजहंस' का शीर्षक
'लहरों के राजहंस' का उद्देश्य

ईकाई-3 काल-भेद और प्रयोग।
वाक्य-विचार: वाक्य-भेद, वाक्य-गठन, तथा वाक्य-परिवर्तन।

ईकाई-4 भूल-सुधार

अंक- विभाजन-ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)
ईकाई 3 से टिप्पणी (दो विकल्प में से एक) (1×7=07 अंक)
और ईकाई 4 से भूल सुधार पर आधारित प्रश्न (7×1=07 अंक)
पठित नाटक से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प में से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें- 1.हिंदी व्याकरण-डॉ.उमेशचंद्र शुक्ल
2.आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना-डॉ.वासुदेवनंदन प्रसाद
3.अच्छी हिंदी-रामचंद्र वर्मा

4.प्रयोग और प्रयोग-वी.रा.जगन्नाथन
5.हिंदी नाटक-बच्चन सिंह
6.आधुनिक नाट्य और नाटक-कुँवरजी अग्रवाल
7.हिंदी नाटकः आज-कल - डॉ.जयदेव तनेजा
8.हिंदी नाटकः आज तक-डॉ.वीणा गौतम
9.हिंदी नाटक-कोश-डॉ.दशरथ ओझा
10.मोहन राकेश और उनके नाटक-गिरीश रस्तोगी
11.मोहन राकेश का साहित्य : समग्र मूल्यांकन-डॉ.शरेशचंद्र कुलश्रेष्ठ
12.नयी रंग चेतना और हिंदी नाटककार-डॉ.जयदेव तनेजा
13.मोहन राकेशः रंगशिल्प और प्रदर्शन-डॉ.जयदेव तनेजा
14.समकालीन हिंदी नाटक एवम् नाटककार-डॉ.दिनेशचंद्र वर्मा
15.मोहन राकेश और उनके नाटकः एक अधुनातम विश्लेषण-पट्टण शेट्टी

*****

HINDI
B.A. DEGREE COURSE
6th SEMESTER

Sr. No.	Name of Course	Total Marks Ext / Internal	Parsing Standard	Total Teaching Hours	Weekly Teaching Hours	Credits
1	PAPER- 6 हिंदी भाषा-कौशल Foundation Course-6	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	~~04~~ 03
2	Self Studies, Assignments & Tutorials Self Study Course-1	-	-	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	
					Total Credits	~~06~~ 03

Model of Time-Table

Session	1	2	3	4	5
Monday	Class -room teaching of One course in each Semester. Three Hours for each course per week Total teaching hours per week=03				Each Day 4th Hour can be used for Library work/presentation ect.
Tuesday					
Wednes					
Thursday					
Friday					
Saturday	Self Study Course				

वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सुरत
तृतीय वर्ष बी.ए.
हिंदी
सेमेस्टर-5
(2015-2016 के शैक्षिक वर्षों के लिए)

प्रश्नपत्र-11 मध्ययुगीन कविता Core Course-

प्रस्तावना: हिंदी का आदिकालीन साहित्य परवर्ती कालों को प्रभावित करने में सक्रिय व सक्षम भूमिका रही है। इस काल के अध्ययन के बिना किसी भी काल का वास्तविक मूल्यांकन संभव नहीं है। भक्तिकाल का काव्य लोक-जागरण और लोक-मंगल का नवीन स्वर लेकर आया। इसने भारत की भावनात्मक एकता और सांस्कृतिक परंपरा को सुरक्षित रखा है। अतः इनका अध्ययन समाज, संस्कृति और युग को समझने के लिए अनिवार्य है।

1.विद्यापति की पदावलियाँ

2.मलिक मुहम्मद जायसी 'पद्मावत' का 'नागमती वियोग-खण्ड'

पाठ्यपुस्तक- **प्राचीन और मध्यकालीन हिंदी काव्य- संपा.डॉ.वीरेन्द्रनारायण सिंह**
(प्रकाशक-धुमिल प्रकाशन, अहमदाबाद)

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 निर्गुण-भक्ति धारा की लाक्षणिकताएँ।
मैथिल कोकिल विद्यापति का साहित्यिक परिचय।

ईकाई-2 विद्यापति की पदावलियों में वर्णित सौंदर्य-चित्रण
विद्यापतिः विलास और यौवन के कवि
विद्यापति का श्रृँगार-चित्रण

ईकाई-3 'पद्मावत' की कथावस्तु
'पद्मावत' में नागमती का विरह-वर्णन
'नागमती वियोग खण्ड' में पद्मावती का संदेश।

ईकाई-4 विद्यापति की गीति-योजना
विद्यापति की भक्ति-भावना
विद्यापति का प्रकृत्ति-चित्रण
'नागमती वियोग खण्ड' में प्रकृति-चित्रण
जायसी की भाषा।

अंक-विभाजन-

ईकाई 2 और 3 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)

ईकाई 1 और 4 से टिप्पणियाँ (चार विकल्प में से दो) (7×2=14 अंक)

पठित कविताओं से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प में से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1.भक्तिकाव्य का समाजशास्त्र-प्रेमशंकर
2.भक्तिकाव्य की भूमिका- प्रेमशंकर
3.भारतीय प्रेमाख्यान काव्य-डॉ.हरिकांत श्रीवास्तव
4.जायसी का पद्मावत-डॉ.गोविन्द त्रिगुणायत
5.विद्यापति की काव्य-साधना-डॉ.देशराजसिंह भाटी, हिंदी साहित्य संसार, दिल्ली
6.हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ-डॉ.जयकिशन प्रसाद खण्डेलवाल
7.हिंदी साहित्य का इतिहास-रामचंद्र शुक्ल
8.हिंदी साहित्य का आदिकाल-हजारीप्रसाद द्विवेदी
9.हिंदी साहित्य का इतिहास. डॉ.नगेन्द्र

अथवा

प्रश्नपत्र-11 मध्ययुगीन कविता Core Course-

प्रस्तावना: हिंदी का आदिकालीन साहित्य परवर्ती कालों को प्रभावित करने में सक्रिय व सक्षम भूमिका रही है। इस काल के अध्ययन के बिना किसी भी काल का वास्तविक मूल्यांकन संभव नहीं है। भक्तिकाल का काव्य लोक-जागरण और लोक-मंगल का नवीन स्वर लेकर आया। इसने भारत की भावनात्मक एकता और सांस्कृतिक परंपरा को सुरक्षित रखा है। अतः इनका अध्ययन समाज, संस्कृति और युग को समझने के लिए अनिवार्य है।

1.सूरदास के पद

2.मीराँबाईकी पदावली

पाठ्यपुस्तक- प्राचीन और मध्यकालीन हिंदी काव्य- संपा.डॉ.वीरेन्द्रनारायण सिंह

(प्रकाशक-धुमिल प्रकाशन, अहमदाबाद)

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 सगुण भक्ति-धारा की प्रमुख विशेषताएँ।
भक्तिकाल हिंदी साहित्य का सुवर्ण युग।

ईकाई-2 सूर की भक्ति-भावना।
सूर का वात्सल्य-वर्णन।
सूर के पदों में अभिव्यक्त विरह-वेदना।

ईकाई-3 मीराँ की भक्ति-भावना
मीराँ के पदों में अभिव्यक्त श्रृंगार
यशोदा का वात्सल्य
सूर की राधा।

ईकाई-4 सूर की भाषा
सूरदास के पद में गीति-योजना
मीराँ का कृष्ण।
मीराँ के पदों में गीतात्मकता।
मीराँ की पदावलियों में अभिव्यक्त रस।

अंक-विभाजन-

ईकाई 2 और 3 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)

ईकाई 1 और 4 से टिप्पणियाँ (चार विकल्प में से दो) (7×2=14 अंक)

पठित कविताओं से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प में से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1.मीराँबाई की पदावली-परशुराम चतुर्वेदी
2.मीराँ की भक्ति और उनकी काव्य-साधना का अनुशीलन- भगवानदास तिवारी
3.भक्ति और रीतिकालीन हिदी मुक्तक काव्य-जितेन्द्र पाठक
4.सूरदास-हरवंसलाल शर्मा
5.सूर-साहित्य- आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी
6.महाकवि सूरदास-नंददुलारे वाजपेयी
7.हिदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ-डॉ.जयकिशन प्रसाद खण्डेलवाल
8.हिदी साहित्य का इतिहास-रामचंद्र शुक्ल
9. हिदी साहित्य का इतिहास. डॉ.नगेन्द्र

+++++

प्रश्नपत्र- 12 गद्य-विधाएँ Core Course-

प्रस्तावना- आधुनिक काल में गद्य साहित्य के विविध रूपों का विकास इस बात का साक्षी है कि प्रौढ मन की पूर्ण अभिव्यक्ति गद्य ही में संभव है। निबंध, नाटक, उपन्यास, कहानी तथा अन्य विविध विधाओं के रूप में गद्य साहित्य का विकास तेजी से हुआ है। मनुष्य को उसकी प्रकृति, परिवेश, परिस्थिति तथा चिंतन की विकास प्रक्रिया के साथ प्रामाणिक रूप में गद्य के माध्यम से ही जाना जा सकता है। अतः इसका अध्ययन अनिवार्य है।

पाठ्यपुस्तक- **गद्य धारा-डॉ.लल्लन राय**
(कोणार्क प्रकाशन, दिल्ली-51)

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 कवियों की उर्मिला -विषयक उदासीनता : महावीर प्रसाद द्विवेदी
महाजनी सभ्यता : प्रेमचंद

ईकाई-2 राजनीति का बँटवारा : हरिशंकर परसाई
सुभान खाँ : रामवृक्ष बेनीपुरी

ईकाई-3 विशिष्ट और अद्वितीय : मुक्तिबोध
'बम' का सहारा: विवेकीराय

ईकाई-4 मेघदूत की पुस्तक समीक्षा : शरद जोशी
विद्यार्थी और राजनीति : जवाहरलाल नेहरू

अंक-विभाजन-

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)
ईकाई 3 और 4 से टिप्पणियाँ (चार विकल्प में से दो) (7×2=14 अंक)
सभी ईकाईयों से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प में से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1.हिंदी निबंध-गोविन्दलाल छाबडा
2.हरिशंकर परसाईः व्यंग्य की वैचारिक पृष्ठभूमि-राधेमोहन शर्मा
3.हिंदी का आधुनिक यात्रा-साहित्य-डॉ.प्रतापपाल शर्मा
4.हरिशंकर परसाई के व्यंग्यों में वर्ग-चेतना-डॉ.आभा भट्ट
5.श्री रामवृक्ष बेनीपुरी-डॉ.रामविलास शर्मा
6.प्रेमचंदः एक विवेचन-डॉ.इन्द्रनाथ मदान, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., नई दिल्ली

+++++

प्रश्नपत्र- 12 गद्य-विधाएँ Core Course-

प्रस्तावना -आधुनिक काल में गद्य साहित्य के विविध रूपों का विकास इस बात का साक्षी है कि प्रौढ मन की पूर्ण अभिव्यक्ति गद्य ही में संभव है। निबंधकहानी तथा अन्य विविध विधाओं के रूप में गद्य साहित्य का विकास ,उपन्यास ,नाटक , ,परिवेश ,तेजी से हुआ है। मनुष्य को उसकी प्रकृति परिस्थिति तथा चिंतन की विकास प्रक्रिया के साथ प्रामाणिक रूप में गद्य के माध्यम से ही जाना जा सकता है। अतः इसका अध्ययन अनिवार्य है।

पाठ्यपुस्तक- **निकष -रामरतन भटनागर**
(साहित्य भवन प्रा.लि., इलाहाबाद)

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 उत्साह- आचार्य रामचंद्र शुक्ल
सुँघनी साहु- जयशंकर प्रसाद

ईकाई-2 चिरतारुण्य की साधना- आचार्य विनोबा भावे

देशभक्त- पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'

ईकाई-3 हीर-कण- रायकृष्णदास

माझुली- 'अज्ञेय'

ईकाई-4 स्टिल लाइफ- फणीश्वर नाथ 'रेणु'

कैजुएल लीव- जमीला कुरैशी

अंक-विभाजन-

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)

ईकाई 3 और 4 से टिप्पणियाँ (चार विकल्प में से दो) (7×2=14 अंक)

सभी ईकाईयों से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प में से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1.हिदी निबंध-गोविन्दलाल छाबडा
2.आचार्य रामचंद्र शुक्लःनिबंध संरचना और काव्य-चितन-डॉ.योगेन्द्र प्रताप सिह
3.हिदी का आधुनिक यात्रा-साहित्य-डॉ.प्रतापपाल शर्मा
4.हिदी निबंध साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन-डॉ.बाबूराम
5.अज्ञेयः एक अध्ययन-डॉ.भोलाभाई पटेल
6.अज्ञेयःसृजन और संघर्ष-राजकमल राय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
7.कथाकार फणीश्वरनाथ रेणु-डॉ.चंद्रभानु सोनवणे, पंचशील प्रकाशन, जयपुर
8.प्रेमचंदः एक विवेचन-डॉ.इन्द्रनाथ मदान, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., नई दिल्ली

+++++

प्रश्नपत्र-13 भारतीय काव्यशास्त्र Elective Course-03

प्रस्तावना -किसी भी रचना की विशिष्टता एवम् मूल्यबोध के उद्घाटन के लिए काव्यशास्त्र और साहित्यालोचन का ज्ञान अनिवार्य है। इनसे ही साहित्यिक समझ विकसित हो सकती है। इससे ही वह दृष्टि मिलती है जिसके आधार पर साहित्य के मर्म और मूल्य की परख हो सकती है। सामाजिकवेश के साथ रचना का आस्वाद करने तथा रचना को उसकी सांस्कृतिक परि-समग्रता में समझने के लिए भारतीय काव्यशास्त्र का अध्ययन आवश्यक है।

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 अ.काव्य-लक्षण, काव्य-हेतु, काव्य-प्रयोजन, काव्य के प्रकार

आ.शब्द-शक्ति, काव्य-गुण, काव्य-दोष

ईकाई-2 रस, अलंकार, रीति, ध्वनि और वक्रोक्ति सिद्धांतों का सामान्य परिचय

ईकाई-3 निम्नलिखित काव्यालंकारः लक्षण और उदाहरण-

उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, विभावना, विशेषण विपर्यय, मानवीकरण,श्लेष, यमक, अनुप्रास और वक्रोक्ति।

ईकाई-4 निम्नलिखित छंदों के लक्षण एवम् उदाहरण-

दोहा, रोला, सवैया, छप्पय, धनाक्षरी, इंद्रवज्रा, मंदाक्रांता, वसंततिलका, शिखरिणी और शार्दूलविक्रीडित।

अंक-विभाजन-

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)

ईकाई 3 और 4 से टिप्पणियाँ (चार विकल्प में से दो) (7×2=14 अंक)

सभी ईकाईयों से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प में से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-1. हिदी आलोचना की बीसवीं सदी-निर्मला जैन
2. रस-चितन के विविध आयाम-सं.आनंदप्रकाश दीक्षित

3. भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा हिदी आलोचना-डॉ.रामचंद्र तिवारी
4. भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका-डॉ.नगेन्द्र
5. रस-सिद्धांत-डॉ.नगेन्द्र
6. भारतीय एवम् पाश्चात्य काव्य-सिद्धांत-डॉ.गणपतिचंद्र गुप्त

+++++

प्रश्नपत्र-14 प्रादेशिक साहित्य **Elective Course-**

प्रस्तावना -भारतीय भाषाओं में हिंदी सर्वोपरि है। इसलिए हिंदी साहित्याध्ययन को अधिक गंभीर बनाना जरूरी है। भारतीय साहित्य की रूप-रचना के लिए हिंदी का भारतीय संदर्भ सर्वथा प्रासंगिक है। इस दृष्टि से छात्रों के लिए भारतीय भाषाओं के साहित्य का ज्ञान अनिवार्य है। इससे उनके ज्ञान एवम् सांस्कृतिक दृष्टि में अभिवृद्धि होगी।

पाठ्यपुस्तक- **मानवीनी भवाई –पन्नालाल पटेल**

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 पन्नालाल पटेल का साहित्यिक परिचय
गुजराती जानपदी (आँचलिक) उपन्यास का विकासः सामान्य परिचय
'मानवीनी भवाई' का कथानक-मूल्यांकन
'मानवीनी भवाई' एक आँचलिक उपन्यास के रूप में।

ईकाई-2 'मानवीनी भवाई' के मुख्य पात्र-काळु एवम् राजु

ईकाई-3 'मानवीनी भवाई' उपन्यास की संवाद-योजना
'मानवीनी भवाई' के परथमीनो पोठी अध्याय में वातावरण-योजना
'मानवीनी भवाई' में अकाल-वर्णन, प्रकृति-चित्रण

ईकाई-4 'मानवीनी भवाई' में पन्नालाल पटेल की वर्णन-शैली
'मानवीनी भवाई' का उद्देश्य
'मानवीनी भवाई' शीर्षक की सार्थकता।
'मानवीनी भवाई' का अंत।

अंक-विभाजन-

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)
ईकाई 3 और 4 से टिप्पणियाँ (चार विकल्प में से दो) (7×2=14 अंक)
सभी ईकाईयों से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प में से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1.अर्वाचीन गुजराती साहित्यनो इतिहास-३-४ (साहित्य परिषद प्रकाशन)
2.अर्वाचीन गुजराती साहित्यनी विकास रेखा-१-२ -डॉ.धीरूभाई ठाकर
3.गुजराती नवलकथा-रघुवीर चौधरी-राधेश्याम शर्मा
4.गुजराती नवलथामां पात्रनिरूपण - २ - डॉ.रमेश दवे
5.गुजराती साहित्यनो इतिहास- रमेश त्रिवेदी
6.अर्वाचीन गुजराती साहित्यनो इतिहास-रमेश त्रिवेदी

अथवा

प्रश्नपत्र-14 प्रादेशिक साहित्य **Elective Course-**

प्रस्तावना -भारतीय भाषाओं में हिंदी सर्वोपरि है। इसलिए हिंदी साहित्याध्ययन को अधिक गंभीर बनाना जरूरी है। भारतीय साहित्य की रूप-रचना के लिए हिंदी का भारतीय संदर्भ सर्वथा प्रासंगिक है। इस दृष्टि से छात्रों के लिए भारतीय भाषाओं के साहित्य का ज्ञान अनिवार्य है। इससे उनके ज्ञान एवम् सांस्कृतिक दृष्टि में अभिवृद्धि होगी।

पाठ्यपुस्तक- **जनमटीप: ईश्वर पेटलीकर**

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 ईश्वर पेटलीकर का साहित्यिक परिचय

गुजराती जानपदी (आँचलिक) उपन्यास का विकासः सामान्य परिचय

'जनमटीप' का कथानक-मूल्यांकन

'जनमटीप' एक आँचलिक उपन्यास के रूप में।

ईकाई-2 'जनमटीप' के पात्र।

ईकाई-3 'जनमटीप' उपन्यास की संवाद-योजना

'जनमटीप' में वातावरण-योजना।

ईकाई-4 'जनमटीप' की भाषा-शैली

'जनमटीप' का उद्देश्य

'जनमटीप' शीर्षक की सार्थकता।

अंक-विभाजन-

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)

ईकाई 3 और 4 से टिप्पणियाँ (चार विकल्प में से दो) (7×2=14 अंक)

सभी ईकाईयों से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प में से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1.अर्वाचीन गुजराती साहित्यनो इतिहास-३-४ (साहित्य परिषद प्रकाशन)
2.अर्वाचीन गुजराती साहित्यनी विकास रेखा-१-२ -डॉ.धीरूभाई ठाकर
3.गुजराती नवलकथा-रघुवीर चौधरी-राधेश्याम शर्मा
4.गुजराती नवलथामां पात्रनिरूपण - २ - डॉ.रमेश दवे
5.गुजराती साहित्यनो इतिहास- रमेश त्रिवेदी
6.अर्वाचीन गुजराती साहित्यनो इतिहास-रमेश त्रिवेदी

+++++

प्रश्नपत्र-15 हिंदी भाषा और लिपि Core Course

. **प्रस्तावना**- साहित्य के गंभीर अध्ययन के लिए भाषिक व्यवस्था का ज्ञान अनिवार्य है। भाषा-वैज्ञानिक आधार पर हिंदी भाषा का ऐतिहासिक विकास-क्रम, भौगोलिक विस्तार, भाषिक-स्वरूप, विविध रूपता तथा हिंदी में कम्प्यूटर सुविधाओं की जानकारी एवम् देवनागरी लिपि के विकास, वैशिष्ट्य और मानकीकरण का विवरण हिंदी के छात्रों के लिए अत्यंत उपयोगी है।

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 1.आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का सामान्य परिचय

2.हिंदी भाषा का उद्गम और विकास

3.हिंदी की उपभाषाएँ एवम् बोलियाँ।

ईकाई-2 1. प्रशासन-व्यवस्था और भाषा

2. भारत की बहुभाषिकता और एक संपर्क भाषा की आवश्यकता

3. राजभाषा (कार्यालयी हिंदी) की प्रकृति

4. हिंदी कम्प्यूटीकरण
5. भूमंडलीकरण के परिपेक्ष्य में हिंदी का भविष्य।

ईकाई-3. राजभाषा विषयक सांविधानिक प्रावधान-

अ. राजभाषा-प्रावधान (अनुच्छेद ३४३ से ३५१),

आ. राष्ट्रपति के आदेश (१९५२, १९५५, १९६०)

ईकाई-4. इ. राजभाषा अधिनियम १९६३ (यथा संशोधित १९६७)

ई. राजभाषा संकल्प (१९६८) यथानुमोदित (१९९१)

उ. राजभाषा नियम १९७६

अंक-विभाजन-

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)

ईकाई 3 और 4 से टिप्पणियाँ (चार विकल्प में से दो) (7×2=14 अंक)

सभी ईकाईयों से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प में से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1.हिंदी भाषा का इतिहास-डॉ.भोलानाथ तिवारी
2.हिंदी भाषा का उद्गम और विकास-उदयनारायण तिवारी
3.राजभाषा हिंदी:प्रगति और प्रयाण-सं.इकबाल अहमद
4.मानक हिंदी व्याकरण-पृथ्वीनाथ पांडेय
5.प्रयोजनपरक हिंदी-सूर्यप्रसाद दीक्षित-योगेन्द्र प्रताप सिह
6.राजभाषा हिंदी-कैलाशचंद्र भाटिया
7.राजभाषा का स्वरूप-कैलाशचंद्र भाटिया

+++++

प्रश्नपत्र-16 प्रयोजनमूलक हिंदी-1

प्रस्तावना- भाषा के प्रयोजनपरक आयाम का संबंध हमारी सामाजिक आवश्यकताओं और जीवन-व्यवहार से है और व्यक्तिपरक होकर भी जो समाज-सापेक्ष सेवा माध्यम के रूप में प्रयुक्त होती है। उत्तर आधुनिक काल में जीवन और समाज की विभिन्न आवश्यकताओं और दायित्वों की पूर्ति के लिए, रोजी-रोटी के लिए विभिन्न व्यवहार क्षेत्रों में उपयोग की जानेवाली प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध आयामों का अध्ययन अति आवश्यक है। इससे राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा का संस्कार भी दृढ़ होगा।

ईकाई-1 १. प्रयोजनमूलक हिंदी: अभिप्राय और उसकी परिव्याप्ति
२. प्रयोजनमूलक हिंदी: प्रयुक्तियाँ और उसके प्रयोगात्मक क्षेत्र

ईकाई-2 ३. प्रयोजनमूलक हिंदी और पारिभाषिक शब्दावली
४. प्रशासनिक हिंदी और उसकी शब्दावली
५. प्रशासनिक पत्राचार और उसके प्रकार

ईकाई-3 संक्षेपण और टिप्पण।

ईकाई-4 अ.प्रशासनिक पदनाम- Accountant, Advisor, Administrator, Announcer, Calculator, Chancellor, Clerk, Collector, Copyist, Editor, Enquiry Clerk, Gate Keeper, Guide, Hostess, In Charge, Inspector, Instructor, Justice, Medical Officer, Peon, Registrar, Surveyor, Translator, Typist,Worker.

ब.अनुभागों के नाम-Department Agriculture, Department Co -Operation, Department Community Development, Department Communications, Department Company Law & Insurance, Department Cottage Industries, Department Economic Affairs, Department Family Planning, Department

Food, Department Iron & Steel, Department Labour and Employment, Department Light House, Department Legal Affairs, Department Meteorological, Department Port, Department Post & Telegraphs, Department Parliamentary Affairs, Department Printing & Stationery, Department Petroleum, Department Revenue, Department Sales Tax, Department statistics, Department Social Welfare, Department Tourism, Department Transport & Shipping.

अंक-विभाजन-

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)

ईकाई 3 से टिप्पणियाँ (दो विकल्प में से एक) (7×1=07 अंक) और

ईकाई 4 से पदनाम-अनुभागों पर आधारित प्रश्न (1×7=07 अंक)

ईकाई 1 और 4 से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प से पाँच।) (5×2=10 अंक)

संदर्भ पुस्तकें-

1. प्रयोजनमूलक हिदीः संरचना एवम् अनुप्रयोग-दिनेश गुप्त
2. प्रयोजनमूलक हिदी-दिनेश गुप्त
3. प्रयोगात्मक और प्रयोजनमूलक हिदी-दिनेश गुप्त
4. व्यावसायिक संप्रेषण-डॉ.अनूपचंद्र भायाणी
5. प्रयोजनमूलक हिदीः पारिभाषिक शब्दावली तथा टिप्पण प्रारूपण-डॉ.मधु धवन
6. प्रामाणिक आलेखन और टिप्पण-प्रो.विराज
7. शुद्ध हिदी-डॉ.विजयपाल सिह
8. प्रशासनिक एवम् कार्यालयी हिदी-डॉ.रामप्रकाश एवम् डॉ.दिनेशकुमार
9. कार्यालयी हिदी - डॉ.विजयपाल
10. राजभाषा हिदी और राजकीय पत्र-व्यवहार-घनश्याम अग्रवाल

5th SEMESTER

Sr. No.	Name of Course	Total Marks Ext / Internal	Parsing Standard	Total Teaching Hours	Weekly Teaching Hours	Credits
1	PAPER -11 मध्यकालीन कविता Core Course-9	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
2	PAPER -11 मध्यकालीन कविता Core Course-9	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
3	PAPER- 12 हिंदी साहित्य की विविध विधाएँ Core Course-10	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
4	PAPER- 12 हिंदी साहित्य की विविध विधाएँ Core Course-10	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
5	PAPER -13 साहित्य के सिद्धांत और हिंदी आलोचना Elective Course-	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 =45 Hrs	3 Hrs	03
6	PAPER -14 प्रादेशिक भाषा-साहित्य Elective Course-5	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
7	PAPER -14 प्रादेशिक भाषा-साहित्य Elective Course-5	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
8	PAPER- 15 हिंदी भाषा और लिपि Core Course-11	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
9	PAPER- 16 प्रयोजनमूलक हिंदी-1 Core Course-12	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
10	Self Studies, Assignments & Tutorials Self Study Course-1	-	-	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	

Model of Time-Table

Session	1	2	3	4	5

अथवा

प्रश्नपत्र-17 रीतिकालीन कविता Core Course-

प्रस्तावना: हिंदी का आदिकालीन साहित्य परवर्ती कालों को प्रभावित करने में सक्रिय व सक्षम भूमिका रही है। इस काल के अध्ययन के बिना किसी भी काल का वास्तविक मूल्यांकन संभव नहीं है। भक्तिकाल का काव्य लोक-जागरण और लोक-मंगल का नवीन स्वर लेकर आया। इसने भारत की भावनात्मक एकता और सांस्कृतिक परंपरा को सुरक्षित रखा है। अतः इनका अध्ययन समाज, संस्कृति और युग को समझने के लिए अनिवार्य है।

1. रामचंद्रचंद्रिका - केशवदास

पाठ्यपुस्तक- केशव-सुधा-संपा.डॉ.विजयपाल सिंह
(प्रकाशक-राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली)

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 1.रीतिकालः नामकरण और समय-सीमा और प्रमुख विशेषताएँ।
2. रीतिबद्ध काव्य-धारा की प्रमुख विशेषताएँ।
3. कवि आचार्य केशवदास का साहित्यिक परिचय।

ईकाई-2 4.'रामचंद्रिका' का काव्य स्वरूप व कथानक।
5.'राम चंद्रिका' के मुख्य पात्र- राम और भरत।
6.'राम चंद्रिका' का भाव-पक्ष।
7. 'राम चंद्रिका' के गौण पात्र- सीता, लक्ष्मण और रावण।

ईकाई-3 8. 'राम चंद्रिका' में प्रकृति-चित्रण।
9. 'राम चंद्रिका' में संवाद-योजना।

ईकाई-4 10. 'राम चंद्रिका' की भाषा।
11. 'राम चंद्रिका' में हास्य-व्यंग्य।

अंक-विभाजन-

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)

ईकाई 3 और 4 से टिप्पणियाँ (चार विकल्प में से दो) (7×2=14 अंक)

पठित कविताओं से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प में से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1.हिंदी साहित्य का इतिहास. डॉ.नगेन्द्र
2.हिंदी साहित्य का इतिहास-डॉ.लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
3.हिंदी साहित्य का आदिकाल-हजारीप्रसाद द्विवेदी
4.हिंदी साहित्य का अतीत-१-२ -विश्वनाथप्रसाद मिश्र
5.हिंदी साहित्य का इतिहास-रामचंद्र शुक्ल
6.हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास-डॉ.बच्चन सिंह
7.हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास-१-२ -डॉ.गणपतिचंद्र गुप्त
8.रीतिकालीन साहित्य कोश-विजयपाल सिंह
9.भक्ति और रीतिकालीन हिंदी मुक्तक काव्य-जितेन्द्र पाठक
10.रीतिकालीन साहित्य कोश-विजयपाल सिंह
11. रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि-रामफेर त्रिपाठी

+++++

प्रश्नपत्र- 18 हिंदी उपन्यास Core Course-

प्रस्तावना -भारतीय भाषाओं में हिंदी सर्वोपरि है। इसलिए हिंदी साहित्याध्ययन को अधिक गंभीर बनाना जरूरी है। भारतीय साहित्य की रूप-रचना के लिए हिंदी का भारतीय संदर्भ सर्वथा प्रासंगिक है। इस दृष्टि से छात्रों के लिए भारतीय भाषाओं के साहित्य का ज्ञान अनिवार्य है। इससे उनके ज्ञान एवम् सांस्कृतिक दृष्टि में अभिवृद्धि होगी।

पाठ्यपुस्तक- बाबा बटेसरनाथ-नागार्जुन

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 आँचलिक उपन्यासः शब्द, परिभाषा, तत्त्व और विशेषताएँ
'बाबा बटेसरनाथ' का कथानक-मूल्यांकन
'बाबा बटेसरनाथ' एक आँचलिक उपन्यास के रूप में।

ईकाई-2 'बाबा बटेसरनाथ ' का नायक।
'बाबा बटेसरनाथ' के गौण पात्र

ईकाई-3 'बाबा बटेसरनाथ' में संवाद एवम् वातावरण-योजना।

ईकाई-4 'बाबा बटेसरनाथ' की भाषा-शैली
'बाबा बटेसरनाथ' का उद्देश्य।
'बाबा बटेसरनाथ' शीर्षक की सार्थकता।

अंक-विभाजन-

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)
ईकाई 3 और 4 से टिप्पणियाँ (चार विकल्प में से दो) (7×2=14 अंक)
पठित उपन्यास से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प में से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1.हिंदी के आँचलिक उपन्यास-संपा.डॉ.रामदरश मिश्र- डॉ.ज्ञानचंद गुप्त (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
2.हिंदी उपन्यास का इतिहास-डॉ.गोपाल राय (राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.नई दिल्ली)
3.आंचलिकता और हिंदी उपन्यास-डॉ.नगीना जैन (अक्षर प्रकाशन, दिल्ली)
4.उपन्यास का स्वरूप-डॉ.शशिभूषण सिंहल (आधुनिक प्रकाशन, दिल्ली-53)
5.स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में कृषक-जीवन-डॉ.उत्तम पटेल (शांति प्रकाशन, रोहतक)
6. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास का स्वरूप- डॉ.मृत्युंजय उपाध्याय
7.हिदी उपन्यासः एक अंतर्यात्रा-डॉ.रामदरश मिश्र (राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.नई दिल्ली)
8.नागार्जुन-संपा.सुरेशचंद्र त्यागी, आशिर प्रकाशन, सहारनपुर
9.हिंदी उपन्यास का इतिहास-डॉ.गोपाल राय (राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.नई दिल्ली)
10.बाबा नागार्जुन-संपा.नरेन्द्र कोहली
11.हिदी उपन्यास-जनवादी परंपरा-संपा.कुँवरपाल सिह
12.नागार्जुन का उपन्यास साहित्य-समसामयिक संदर्भ-डॉ.सुरश यादव

+++++

अथवा

प्रश्नपत्र- 18 हिंदी उपन्यास Core Course-

प्रस्तावना -भारतीय भाषाओं में हिंदी सर्वोपरि है। इसलिए हिंदी साहित्याध्ययन को अधिक गंभीर बनाना जरूरी है। भारतीय साहित्य की रूप-रचना के लिए हिंदी का भारतीय संदर्भ सर्वथा प्रासंगिक है। इस दृष्टि से छात्रों के लिए भारतीय भाषाओं के साहित्य का ज्ञान अनिवार्य है। इससे उनके ज्ञान एवम् सांस्कृतिक दृष्टि में अभिवृद्धि होगी।

पाठ्यपुस्तक- **कोहबर की शर्त - केशवप्रसाद मिश्र**

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 आँचलिक उपन्यासः शब्द, परिभाषा, तत्त्व और विशेषताएँ

'कोहबर की शर्त' का कथानक-मूल्यांकन

'कोहबर की शर्त' एक आँचलिक उपन्यास के रूप में।

ईकाई-2 'कोहबर की शर्त ' के मुख्यपात्र-चंदन, गुंजा, ओंकार।

ईकाई-3 'कोहबर की शर्त' के गौण पात्र-काका, वैद्यजी, बाला,दशरथ, बिहँसी आदि।

'कोहबर की शर्त' में संवाद एवम् वातावरण-योजना।

ईकाई-4 'कोहबर की शर्त' की भाषा-शैली

'कोहबर की शर्त' का उद्देश्य।

'कोहबर की शर्त' शीर्षक की सार्थकता।

अंक-विभाजन-

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)

ईकाई 3 और 4 से टिप्पणियाँ (चार विकल्प में से दो) (7×2=14 अंक)

पठित उपन्यास से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प में से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1.हिंदी के आँचलिक उपन्यास-संपा.डॉ.रामदरश मिश्र-डॉ.ज्ञानचंद गुप्त (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
2.हिंदी उपन्यास का इतिहास-डॉ.गोपाल राय (राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.नई दिल्ली)
3.आंचलिकता और हिंदी उपन्यास-डॉ.नगीना जैन (अक्षर प्रकाशन, दिल्ली)
4.उपन्यास का स्वरूप-डॉ.शशिभूषण सिंहल (आधुनिक प्रकाशन, दिल्ली-53)
5.स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में कृषक-जीवन-डॉ.उत्तम पटेल (शांति प्रकाशन, रोहतक)
6. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास का स्वरूप, डॉ.मृत्युंजय उपाध्याय
7.हिदी उपन्यासः एक अंतर्यात्रा-डॉ.रामदरश मिश्र (राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.नई दिल्ली)
8.हिंदी उपन्यास का इतिहास-डॉ.गोपाल राय (राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.नई दिल्ली)

+++++

प्रश्नपत्र-19 पाश्चात्य साहित्य-सिद्धांत Elective Course-03

प्रस्तावना- किसी भी रचना की विशिष्टता एवम् मूल्यबोध के उद्घाटन के लिए काव्यशास्त्र और साहित्यालोचन का ज्ञान अनिवार्य है। इनसे ही साहित्यिक समझ विकसित हो सकती है। इससे ही वह दृष्टि मिलती है जिसके आधार पर साहित्य के मर्म और मूल्य की परख हो सकती है। सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश के साथ रचना का आस्वाद करने तथा रचना को उसकी समग्रता में समझने के लिए भारतीय काव्यशास्त्र का अध्ययन आवश्यक है।

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 1. साहित्यः परिभाषा, साहित्य और समाज

2. कविताः परिभाषा, कविता-तत्व, कविताः प्रकार (प्रबंध और प्रगीत)

ईकाई-2 3.समालोचनाः स्वरूप, समालोचनाः प्रकार, आलोचक के गुण

4. उपन्यासः परिभाषा. तत्त्व और प्रकार।

5. नाटकः परिभाषा, तत्त्व और प्रकार।

ईकाई-3 6.कहानीः परिभाषा, तत्त्व और प्रकार।

7.निबंधः परिभाषा, तत्त्व और प्रकार।

ईकाई-4 8. प्रमुख हिंदी आलोचकः परिचयात्मक अध्ययन एवम् योगदान-

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल 2. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

3. डॉ.नंददुलारे वाजपेयी 4. डॉ.रामविलास शर्मा।

अंक-विभाजन-

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)

ईकाई 3 और 4 से टिप्पणियाँ (चार विकल्प में से दो) (7×2=14 अंक)

सभी ईकाईयों से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प में से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

१. पाश्चात्य साहित्य-चितन-सं.निर्मला जैन

२. हिदी आलोचना की बीसवीं सदी-निर्मला जैन

३. रस-चितन के विविध आयाम-सं.आनंदप्रकाश दीक्षित

४. भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा हिदी आलोचना-डॉ.रामचंद्र तिवारी

५. भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका-डॉ.नगेन्द्र

६. रस-सिद्धांत-डॉ.नगेन्द्र

७. पाश्चात्य काव्यशास्त्र-डॉ.भगीरथ मिश्र

८. साहित्य के प्रमुख पक्ष-डॉ.राममूर्ति त्रिपाठी

९. भारतीय एवम् पाश्चात्य काव्य-सिद्धांत-डॉ.गणपतिचंद्र गुप्त

१०.माक्र्सवादी,समाजशास्त्रीय और ऐतिहासिक आलोचना-डॉ.शशिभूषण पांड़ेय

११.शास्त्रवादी और स्वच्छंदतावादी साहित्यादर्श और समीक्षा-प्रणाली- पी.वासवदत्ता

१२.हिदी आलोचना का विकास-नंदकिशोर नवल

१३.भारतीय एवम् पाश्चात्य काव्यशास्त्र-डॉ.विजयपाल सिह

+++++

प्रश्नपत्र-20 प्रादेशिक साहित्य Elective Course-

प्रस्तावना -भारतीय भाषाओं में हिंदी सर्वोपरि है। इसलिए हिंदी साहित्याध्ययन को अधिक गंभीर बनाना जरूरी है। भारतीय साहित्य की रूप-रचना के लिए हिंदी का भारतीय संदर्भ सर्वथा प्रासंगिक है। इस दृष्टि से छात्रों के लिए भारतीय भाषाओं के साहित्य का ज्ञान अनिवार्य है। इससे उनके ज्ञान एवम् सांस्कृतिक दृष्टि में अभिवृद्धि होगी।

1. नळाख्यान - प्रेमानंद

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 प्रेमानंद का साहित्यिक परिचय

गुजराती आख्यानक काव्य का स्वरूप, विकास और विशेषताएँ

'नळाख्यान' का कथानक:मूल्यांकन

ईकाई-2 'नळाख्यान': एक सफल आख्यानक काव्य

'नळाख्यान' में पात्र-योजना

'नळाख्यान' में रस-योजना

ईकाई-3 'नळाख्यान' में संवाद-योजना

'नळाख्यान' के गौण-पात्र

ईकाई-4 'नळाख्यान'की भाषा-शैली

'नळाख्यान' का उद्देश्य

'नळाख्यान' शीर्षक की सार्थकता।

अंक-विभाजन-

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)

ईकाई 3 और 4 से टिप्पणियाँ (चार विकल्प में से दो) (7×2=14 अंक)

पठित आख्यान से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प में से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1.प्राचीन गुजराती साहित्यनो इतिहास-१ (साहित्य परिषद प्रकाशन)
2.मध्यकालीन गुजराती साहित्यनो इतिहास-२ (साहित्य परिषद प्रकाशन)
3.प्रेमानंदः एक समालोचना-रमेश शुक्ल
4.गुजराती साहित्यनो इतिहास- रमेश त्रिवेदी

अथवा

प्रश्नपत्र-20 प्रादेशिक साहित्य Elective Course-

प्रस्तावना -भारतीय भाषाओं में हिंदी सर्वोपरि है। इसलिए हिंदी साहित्याध्ययन को अधिक गंभीर बनाना जरूरी है। भारतीय साहित्य की रूप-रचना के लिए हिंदी का भारतीय संदर्भ सर्वथा प्रासंगिक है। इस दृष्टि से छात्रों के लिए भारतीय भाषाओं के साहित्य का ज्ञान अनिवार्य है। इससे उनके ज्ञान एवम् सांस्कृतिक दृष्टि में अभिवृद्धि होगी।

1. ओखाहरण - प्रेमानंद

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 प्रेमानंद का साहित्यिक परिचय

गुजराती आख्यानक काव्य का स्वरूप, विकास और विशेषताएँ

'ओखाहरण' का कथानक : मूल्यांकन

ईकाई-2 'ओखाहरण': एक सफल आख्यानक काव्य

'ओखाहरण' में पात्र-योजना

'ओखाहरण' में रस-योजना

ईकाई-3 'ओखाहरण' में संवाद-योजना

'ओखाहरण' के गौण-पात्र

ईकाई-4 'ओखाहरण'की भाषा-शैली

'ओखाहरण' का उद्देश्य

'ओखाहरण' शीर्षक की सार्थकता।

अंक-विभाजन-

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)

ईकाई 3 और 4 से टिप्पणियाँ (चार विकल्प में से दो) (7×2=14 अंक)

पठित आख्यान से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प में से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1.प्राचीन गुजराती साहित्यनो इतिहास-१ (साहित्य परिषद प्रकाशन)
2.मध्यकालीन गुजराती साहित्यनो इतिहास-२ (साहित्य परिषद प्रकाशन)
3.प्रेमानंदः एक समालोचना-रमेश शुक्ल
4.गुजराती साहित्यनो इतिहास- रमेश त्रिवेदी

+++++

प्रश्नपत्र-21 हिंदी व्याकरण Core Course-

प्रस्तावना- भाषा के शुद्ध व परिनिष्ठित रूप की जानकारी के लिए व्याकरण शास्त्र का ज्ञान अत्यंत आवश्यक है। इसके उपयोग से ही हिंदी की प्रकृति का परिचय मिल सकता है।

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 1. व्युत्पत्ति एवम् रचना की दृष्टि से शब्दों का वर्गीकरण
ईकाई-2 1. संज्ञाः परिभाषा एवम् भेद
2. सर्वनाम : परिभाषा एवम् भेद
ईकाई-3 1. विशेषण की परिभाषा एवम् प्रकार
2. क्रिया की परिभाषा एवम् प्रकार
ईकाई-4 1. वचन एवम् कारक का परिचय।

अंक-विभाजन-

ईकाई 1-2 और 3-4 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)
सभी ईकाईयों से टिप्पणियाँ (चार विकल्प में से दो) (7×2=14 अंक)
सभी ईकाईयों से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प में से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

१.हिंदी व्याकरण-पं.कामताप्रसाद गुरू, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
२.हिंदी व्याकरण मीमांसा-काशीराम शर्मा
3. व्यावहारिक हिंदी व्याकरण-डॉ.हरदेव बाहरी,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4.हिंदी रूप-रचना भाग-1-2- लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

+++++

प्रश्नपत्र-22 प्रयोजनमूलक हिंदी-2

प्रस्तावना- भाषा के प्रयोजनपरक आयाम का संबंध हमारी सामाजिक आवश्यकताओं और जीवन-व्यवहार से है और व्यक्तिपरक होकर भी जो समाज-सापेक्ष सेवा माध्यम के रूप में प्रयुक्त होती है। उत्तर आधुनिक काल में जीवन और समाज की विभिन्न आवश्यकताओं और दायित्वों की पूर्ति के लिए, रोजी-रोटी के लिए विभिन्न व्यवहार क्षेत्रों में उपयोग की जानेवाली प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध आयामों का अध्ययन अति आवश्यक है। इससे राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा का संस्कार भी दृढ़ होगा।

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 हिंदी का वैज्ञानिक एवम् तकनीकी रूप।
ईकाई-2 वैज्ञानिक, तकनीकी एवम् प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में हिंदी।
हिंदी अनुप्रयोग में अनुवाद की भूमिका।
अनुवाद की अवधारणा, उसका महत्व और विभिन्न सिद्धांत।
ईकाई-3 हिंदी में मीडिया लेखन
जनसंचार-माध्यमः अभिप्राय, स्वरूप और विस्तार
जनसंचार-माध्यमों के प्रकार

ईकाई-4 समाचार-लेखन और हिंदी
संवाद-लेखन और हिंदी
रेडियो-लेखन और हिंदी
विज्ञापन-लेखन।

अंक-विभाजन-

ईकाई 2 और 3 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)

ईकाई 1 और 4 से टिप्पणियाँ (चार विकल्प में से दो) (7×2=14 अंक)

सभी ईकाईयों से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प में से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1. अनुवाद-बोध - डॉ.गार्गी गुप्त
2. अनुवाद-विज्ञान- डॉ.भोलानाथ तिवारी
3. जनसंचार:विविध आयाम- ब्रजमोहन गुप्त
4. मीडिया और साहित्य- सुधीश पचौरी
5. व्यावहारिक अनुवाद- डॉ.एन.ई.विश्वनाथ ऐयर
6. प्रयोजनपरक हिदी- प्रो.सूर्यप्रसाद दीक्षित एवम् डॉ.योगेन्द्र प्रताप सिह
7. प्रयोजनमूलक हिदी: विविध आयाम- माया सिह
8. प्रयोजन मूलक हिदी का अध्ययन- डॉ.सुशीला गुप्ता

+++++

HINDI

B.A. DEGREE COURSE

6th SEMESTER

Sr. No.	Name of Course	Total Marks Ext / Internal	Parsing Standard	Total Teaching Hours	Weekly Teaching Hours	Credits
1	PAPER -17 मध्यकालीन कविता Core Course-13	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
2	PAPER -17 मध्यकालीन कविता Core Course-13	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
3	PAPER- 18 हिदी उपन्यास Core Course-14	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
4	PAPER- 18 हिदी उपन्यास Core Course-14	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
5	PAPER -19 साहित्य के सिद्धांत और हिदी आलोचना Elective Course-6	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 =45 Hrs	3 Hrs	03

6	PAPER -20 प्रादेशिक भाषा-साहित्य Elective Course-6	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
7	PAPER -20 प्रादेशिक भाषा-साहित्य Elective Course-3	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
8	PAPER- 21 हिंदी व्याकरण Core Course-15	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
9	PAPER- 22 प्रयोजनमूलक हिंदी-1 Core Course-16	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	03
6	Self Studies, Assignments & Tutorials Self Study Course-2	-	-	15 Weeks × 3 = 45 Hrs	3 Hrs	02

Model of Time-Table

Session	1	2	3	4	5
Monday	Class -room teaching of two course in each Semester. Three Hours for each course per week Total teaching hours per week=06				Each Day 4th Hour can be used for Library work//presentation ect.
Tuesday					
Wednes					
Thursday					
Friday					
Saturday	Self Study Course				

			तृतीय वर्ष बी.ए.		
	सेमेस्टर-5			सेमेस्टर-6	
प्रश्नपत्र	मूल	वैकल्पिक		मूल	वैकल्पिक
अनिवार्य हिंदी	अंजो दीदी -उपेन्द्र नाथ अश्क व्याकरण	-		लहरों के राजहंस -मोहन राकेश व्याकरण	-
पे-11	मध्ययुगीन कविता -जी भास्कर पद्मावत नागमती विरह खण्ड	मध्ययुगीन कविता	पे-17	रीतिकालीन कविता	रीतिकालीन कविता
पे-12	निकष -रामरतन भटनागर	गद्य धारा -डॉ.लल्लन राय	पे-18	उपन्यास कोहबर की शर्त	अतीत के चलचित्र -महादेवी वर्मा

	निबंधश्री	निबंध निकष संपा.रामचंद्र तिवारी		उपन्यास	अरे यायावर रहेगा याद -अज्ञेय
पे-13	भारतीय काव्यशास्त्र		पे-19	पाश्चात्य काव्यशास्त्र	
पे-14	जनमटीप -पेटलीकर नलाख्यान	मानवीनी भवाई -पन्नालाल पटेल ओखाहरण	पे-20	झेर तो पीधों छे जाणी जाणी -दर्शक काव्य	दिव्यचक्षु -र.व.देसाई काव्य
पे-15	हिंदी भाषा और लिपि	हिंदी भाषा-प्रशिक्षण-1	पे-21	व्याकरण	हिंदी भाषा-प्रशिक्षण-2
पे-16	प्रयोजनमूलक हिंदी-1	अनुवाद सिद्धांत	पे-22	प्रयोजनमूलक हिंदी-2	लोक साहित्य